विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता

डॉ. प्रीता रमणी टी.इ

असिस्टेंट प्रोफसर

सरकारी महिला महाविद्यालय

तिरुवनंतपुरम

आज उदारीकरण, वैश्वीकरण और औद्योगीकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय विकास बहुत तेज़ी से हो रहा है। विज्ञापन, वेब, संगीत, सिनेमा, पत्रकारिता, बाज़ार आदि के क्षेत्र में हिन्दी की माँग जिस तेज़ी से बढ रही है वैसी किसी अन्य भाषा में नहीं। विचारों को जनता तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम है पत्रकारिता। डॉ. पी. लता के अनुसार ""जनमत तैयार करना, जनमत प्रदर्शित करना और जनता का सही मार्गदर्शन करना - यही समाचार पत्रों का कर्तव्य है।""1 हिन्दी भारत की ही नहीं, पूरे विश्व में एक विशाल क्षेत्र की भाषा बन गयी है। विश्व के अनेक देश हैं जहाँ शताब्दियों पूर्व भारतीय जाकर बस गये थे और उनके वंशज आज भी वहाँ निवास करते हैं। इसलिए भारत के अतिरिक्त दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण आफ्रिका, यूरोप, अमेरिका, कैनडा और अटलांटिक महासागर के कई द्वीप-देशों में हिन्दी का प्रचार प्रसार हुआ है। अनेक प्रवासी अपने धर्म, संस्कृति और भाषा से भावात्मक रूप से जुडे हुए हैं। इनके द्वारा समय-समय पर हिन्दी पत्रकारिता की उन्नति केलिए पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ किया गया था, जो विविध रूपों में आज भी हो रहा है। इसके मूल में हिन्दी पत्रकारिता के प्रति निष्ठा एवं अंतर्राष्ट्रीय विकास की भावना निहित है। ""पत्र-पत्रिकाओं के विविध आयामों को प्रकाश में लाने का कार्य करने में आज हिन्दी भाषा सक्षम है। पत्रकारिता में हिन्दी के प्रयोग केलिए आवश्यक शब्द संपदा है।""2 अनेक देशों में व्यावहारिक रूप में लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से पत्र-पत्रिकाओं में हिन्दी के साथ ही स्थानीय भाषाओं का अंश भी प्रकाशित किया जाता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से विदेशों में प्रकाशित सबसे पहला हिन्दी पत्र था "हिन्दोस्थान"। यह पूर्वी उत्तरप्रदेश के कालाकाँकर राज्य के राजा समपाल सिंह के प्रयत्न से 1883 से 1885 तक एक त्रैमासिक पत्र के रूप में लंदन से प्रकाशित हुआ था। आरंभ में यह पत्र हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी में त्रिभाषी आधार पर निकाला गया था। कालांतर में इसकी परिणति "सम्राट" नामक पाक्षिक पत्र में हो गयी। "हिन्दोस्थान" के संपादकों में गोपाल राम गहमरी, मदन मोहन मालवीय, प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इसके बाद लंदन से प्रकाशित होनेवाली प्रमुख पत्रिका थी "प्रवासिनी"। 1970 से "अमरदीप" नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन श्री जगदीश कौशल द्वारा लंदन से आरंभ किया गया। इसके अतिरिक्त 1997 में पद्मेश गुप्त के द्वारा "पुरवाई" नामक पत्रिका का प्रकाशन भी हुआ था।

इसके अतिरिक्त लंदन से प्रकाशित हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में शांता सोनी द्वारा संपादित "नवीन" शीर्षक साप्ताहिक पत्र, एस.एन. गोरी सरिया के संपादकत्व में प्रकाशित "सन्मार्ग" शीर्षक पत्र, सुकुमार मजूमदार द्वारा संपादित "प्रवासी" नामक पत्र आदि भी विशेष उल्लेखनीय हैं। "काँमन वेल्त आँफ नेशन्स" की ओर से "वर्तमान राष्ट्रकुल" नाम की एक हिन्दी पत्रिका भी "उच्चायोग, लंदन" से प्रकाशित की गयी है। नार्वे से भी कई हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित हुई हैं। "शांतिदूत" (द्विमासिक (1990)), "त्रिवेणी" (संपादक-कैलाश राय, द्विमासिक, 1993) "स्पाइल" (सुरेश चन्द्र शुक्ल, त्रिभाषी, 1998) "परिचय", "पहचान" आदि इनमें प्रमुख हैं। फ्रान्स से भी हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रयत्न परिलक्षित होते हैं। फ्रांस की राजधानी पारिस से प्रकाशित "युनेस्को कूरियार" नामक पत्र का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

हिन्दी पत्रकारिता में दक्षिण आफ्रिका से प्रकाशित पत्रों का भी उल्लेखनीय स्थान है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वहाँ के प्रवासी भारतीयों ने जनजागरण पैदा करना के उद्देश्य से कई पत्रों का प्रकाशन किया।

1904 में मदनजीत ने आफ्रिका के डरबन नगर से "इंडियन ओपीनियन" नामक एक पत्र संपादित किया, जो कालांतर में फीनिक्स से गाँधीजी के नेतृत्व में कई भाषाओं में निकलने लगा। इस पत्र ने "नेटाल इंडियन कांग्रेस" और "ब्रिटिश उपनिवेश विरेधी आन्दोलन" जैसे राष्ट्रीय आंदोलनों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह भी किया ता। 1912 में रल्लाराम गाँधी लामल भल्ला ने डरबन से ही "धर्मवीर" नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शुरु किया था। 1917 से इसका संपादन स्वामी भवानीदयाल सन्यासी ने किया। लेकिन यह कुछ दिन चलकर बंद हो गया। 1918 से 1922 तक यह फिर चला और इसके पश्चात इसका प्रकाशन समाप्त हो गया। सन्यासी जी ने नेटाल से 1910 में "अमृतसिंधु" नामक एक पत्र भी निकाला था। आफ्रिका से एक और उल्लेखनीय पत्र "हिंदू" भी प्रकाशित होता था, जो भारतीयता के विकास में उत्प्रेरक सिद्ध हुआ था। इसके अतिरिक्त 1950 में "आर्य प्रतिनिधि सभा" का मुखपत्र "आर्य मित्र" भी दक्षिण आफ्रिका से प्रकाशित हुआ था।

फीजी में भी हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का पर्याप्त प्रचलन है। यहाँ से अनेक पत्रों का प्रकाशन हुआ है, जो सामाजिक धार्मिक एवं राजनैतिक विषयों के साथ-साथ कृषि, विनोद आदि से भी संबन्धित हैं। प्राप्त सूचनाओं के अनुसार फीजी की हिन्दी पत्रकारिता 1913 में "सेटलर" पत्र से शुरु हुई। यहाँ व्यक्तिगत स्तर पर और कुछ संस्थाओं द्वारा हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। "अखिल फीजी कृषक संघ" शीर्षक से एक पत्र का प्रकाशन दीनबन्दु के संपादकत्व में फीजी में हुआ था। इसी प्रकार "किसान" शीर्षक से भी एक पत्रिका का प्रकाशन बी.बी. लक्ष्मण के द्वारा किया गया था। कृषि विषयक एक अन्य पत्रिका नन्द किशोर के संपादकत्व में "किसान मित्र" नाम से प्रकाशित हुई थी।

फीजी द्वीप समूह से प्रकाशित अन्य पत्र-पत्रिकाओं में कमला प्रसाद मिश्र द्वारा संपादित साप्ताहिक समाचार पत्र "जय फीजी" विवेकानंद शर्मा द्वारा संपादित "सनातन संदेश", "संस्कृति" और "फीजी संदेश", जयनारायण शर्मा और गुरु दयाल शर्मा द्वारा प्रकाशित "शांतिदूत", राघवानंद शर्मा द्वारा प्रकाशित "जागृति" आदि विशेष उल्लेखनीय है।

हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में मोरिशस की जो भूमिका है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में लघुभारत के नाम से विख्यात मोरिशस ने हिन्दी को विश्व हिन्दी स्थर पर प्रतिष्ठित करने में सराहनीय कोशिश की है। मोरिशस के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न भारतवंशी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत के अनुसार ""मोरिशस ने हिन्दी को विश्व हिन्दी बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है और अपने देश में एक प्रतिष्ठित और साहित्यिक भाषा के रूप में सँवारा है।""1

समय-समय पर मोरीशस से हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ निकलती रहती हैं। "हिन्दुस्थानी", "इंदियन टाड़म्स", "जनता", "जमाना", "वर्तमान" "आर्यमित्र", "सनातन धर्म" आदि इनमें प्रमुख हैं। मेरिशस के प्रमुख संपादकों में अभिमन्यु अनत, मोहनलाल मोहित, मणिलाल ठाकुर, मनीश्वरलाल चिन्तामणि, रामदेव धुरंधर, प्रह्लाद रामशरण आदि अग्रगण्य हैं। अभिमन्यु अनत एवं महेश राम जियावन द्वारा संपादित "आभा" त्रैमासिक का स्तर भी साहित्यिक दृष्टि से काफी सराहनीय है। "महात्मा गाँधी संस्थान" पोर्टलूई से गिरिजानंद और अभिमन्यु अनत द्वारा संपादित "बसंत" पत्रिका अठारह वर्षों से लगातार निकल रही है। यह उच्चकोटि की "साहित्यिक पत्रिका है और विश्व के करीब चालीस से अधिक विश्वविद्यालयों में पहूँचती है। "बसंत" का साथी प्रकाशन है "रिमझिम", जो बच्चों की पत्रिका है।

सूरीनाम के प्रवासी भारतियों ने भी अपनी साँस्कृतिक संपदा को बनाए रखने केलिए कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया। उन्होंने अनेक मुद्रित और हस्तलिखित दैनिक साप्ताहिक "प्रकाश" और "शांतिदूत" तथा मासिक "ज्योति" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त "जागृति", सूरीनाम दर्पण, "आर्य दिवाकर", "सरस्वती", "भारत समाचार" (हिन्दी, डच, अंग्रेजी में प्रकाशित समाचा पत्र), "शब्द शक्ति" (2003) आदि भी प्रमुख हैं। ये पत्र सूरिनाम में हिन्दी पत्रकारिता के द्योतक ही नहीं बल्कि प्रवासी भारतीयों की हिन्दी के प्रति रुचि भी दर्शाते हैं।

अमेरिका में भी हिन्दी पत्रकारिता का विकास हुआ है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के सैनफ्रांसिस्को की गदर पार्टी से 1915 में "गदरे हिसाला" नामक पत्र निकाला गया था। कैनडा के स्टाकटन में 1973 में लाला हरदयाल द्वारा

प्रकाशित पत्र है "गदर"। कैनडा में प्रवासी भारतीय बहुत हैं, इसलिए वहाँ से "संगम पाक्षिक", "भारतीय", "विश्व भारती" (सं रघुवीर सिंह 1981) "संवाद", "मेधाविनी" आदि अनेक पत्र प्रकाशित हुए हैं।

ब्रिटीश गुयाना भी हिन्दी पत्रकारिता का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। यहाँ स्थित "आर्य प्रतिनिधि सभा" की ओर से प्रकाशित "आर्य ज्योति", "सनातन धर्म सभा" की ओर से प्रकाशित एवं पं. रामलाल द्वारा संपादित "अमर ज्योति" योगराज शर्मा द्वारा संपादित साहित्यिक समाचार पत्र "भारत समाचार" तथा "ज्ञानदा" विशेष उल्लेखनीय हैं।

त्रिनिडाड की हिन्दी पत्रकारिता भी महत्वपूर्ण रही है। यहाँ के भारतवासियों ने "ज्योति" नामक एक मासिक पत्रिका और "कोहिनूर अखबार" नामक एक दैनिक पत्र का संचालन 1968 में शुरु किया था। ये आज भी "भारतीय विद्या संस्थान" एवं "हिन्दी शिक्षा संघ" से प्रकाशित हो रहे हैं। यहाँ "आर्य समाज" ने श्री. एल. मिश्र के संपादकत्व में चौथे दशक में "आर्य संदेश" नामक पत्र निकाला था। "सनातन धर्म महासभा" ने हरिशंकर आदेश के संपादकत्व में 1968 में "हिन्दू" नामक एक द्विभाषी पत्र प्रकाशित किया था।

मोस्को से भी हिन्दी पत्र पत्रिकाएँ पकाशित होती हैं। मोस्को से प्रकाशित विशेष उल्लेखनीय पत्र है "सोवियत संघ"। 1972 में प्रकाशित इस पत्र के प्रधान संपादक निकालोई गिबाचोव तथा चित्रकार अलक्सान्द्र जितो मिस्की हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ से "सोवियत नारी", "सोवियत दर्पण", "युवक दर्पण" आदि पत्र भी निकले हैं। रूस से वारन्निक्केव द्वारा संपादित भारतीय सिनेमा समाचार पत्र "नीक" की भी हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट भूमिका है। इसके अतिरिक्त चीन, जापान, तिब्बत आदि एशियाई देशों से भी हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। जापान से प्रकाशित "सर्वोदय" पत्र एवं तिब्बत से प्रकाशित "तिब्बत बुलेटिन" भी विशेष स्मरणीय हैं।

भारतीय के पडोसी देशों में परिचालित हिन्दी पत्रों की स्थिति भी विचारणीय है। बर्मा से हिन्दी की अनेक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती है। इनमें "जागृति", "ब्रहमभूमि", "प्राची", "प्रकाश", "बर्मा समाचार", "प्रवासी" आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय स्थान है। नेपाल की राजधानी काठमंडू से "नेपाल" शीर्षक एक हिन्दी पत्र प्रकाशित होता है। इसके अतिरिक्त "रिमझिम", "गोरखा", "समाज", "मजदूर" आदि पत्र-पत्रिकाएं भी काठमंडू से प्रकाशित होती हैं। श्रीलंका, शिगापुर आदि देशों को भी हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष स्थान है। श्रीलंका से हेमंतकुमारी द्वारा प्रकाशित पत्रिका थी "सुगृहिणी"।

इसप्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता लगभग सवा सै से अधिक वर्षों से चल रही है। इसने विश्व संचार में जो महत्वपूर्ण योगदान दिया है वह सराहनीय एवं स्मरणीय है। यह एक उल्लेखनीय बात है कि जिस प्रकार से विदेशों में भी प्रवासी भारतीयों के द्वारा उसके विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य हुआ है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. पी.लता, प्रयोजनमूलक हिन्दी, पृ 119

2. डॉ. पी.लता, प्रयोजनमूलक हिन्दी, पृ 120

3. डॉ. वी.वी. विश्वम (संपादक), संग्रथन (पत्रिका), नवंबर 2013, पृ 19